उत्तराखण्ड स्थापना दिवस : बहुत दूर तलक देखना होगा

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 23 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 13 नवम्बर 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उम्मीदों की चाह में थाप देता पहाड़ी

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड अपने 24वें स्थापना दिवस पर थिरक रहा है और ताक रहा है कि आने वाला कल कैसा होगा? सरकार कहती है सारे रिकार्ड टूट चुके हैं और सबकुछ विकास को समर्पित है। विपक्ष तर्क दे रहा है कि जब बचा ही कुछ नहीं तो कौन सा रिकार्ड बन रहा है। ऐसे में आम जनता के पास थिरकने सिवा कुछ नहीं बचता है। पृथक पर्वतीय राज्य बनने के बाद से उत्तराखण्ड में महोत्सवों की बाढ़ है। उम्मीदों की चाह में थाप देता पहाड़ी समझने लगा है कि 'राजनीति' क्या होती है। यही कारण है कि समय की धारा में बहना उसकी नियती हो चुकी है। पब्लिक 'होय होय' में उलझी है। चारों ओर सजावट के साथ दरबार सजे हैं और सोशल मीडिया पर भीड़ दिख रही है। जिससे यह तय कर पाना कठिन है कि पर्वतीय प्रदेश में कितनी खुशहाली है। झूमते लोगों को देख कौन कहेगा कि गाँव आज तक भी मूलभूत समस्याओं से जूझ रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की होशियारी है कि उन्होंने उत्तराखण्ड को अपने प्रचार के लिये चुना और यहीं से चारों ओर अपनी बात पहुँचा दी। केदारनाथ से लेकर गुंजी तक उनकी नज़र ने जितनी दूर को समझा है, उतना यह पर्वत प्रदेश नहीं समझ सका.....। उनके स्वागत-सत्कार में इतना जरूर हुआ कि रोजी-रोटी के लिये कुछ मौका बन पाएगा। दूरस्थ और दुर्गम इलाकों तक पर्यटन ही सहारा है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी लगातार दौड़ रहे हैं। जो होना है वह होता रहेगा लेकिन उनकी दौड़ ने यह तो बता ही दिया है कि जन नेता को कितना भागना पड़ता है। प्रदेश छोटा है लेकिन अपने प्रदेश से लेकर विदेश की धरती तक जिस प्रकार से वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सामने अपने को प्रस्तुत कर चुके हैं वह उनके प्रिय हैं। ऐसे में सत्ता के नेता और अधिकारी सभी हवन-पूजन में अग्रणीय हैं.....। सीएम ने देश-विदेश के सक्षम लोगों को आमंत्रित किया है कि वह निवेश करें और जमरानी बांध सहित बड़ी योजनाओं की स्वीकृति की खुशी भी है। इस पर विपक्ष के सुरताल सत्ता की चाल को बहका बता रहे हैं। कांग्रेस प्रवक्ता दीपक बल्युटिया ने तो बकायदा पूरा डाटा बताते हुए कहा है जिस प्रकार से सीएम आमंत्रण की बात कर रहे हैं, प्रदेश में इतनी भूमि बची ही कहाँ है जो बाहर से आकर कोई करार कर ले। प्रदेश के हिस्से जंगल हैं, उन्हें बचाया जाना है। रही बात जमरानी की 40-50 साल पहले जब इसकी मांग उठी थी तब पूरा भाबर खेती के लिये विख्यात था, आज जमीनों के सौदे में प्रदेश में बचा ही क्या है? सरकार कह रही है सिंचाई का लाभ होगा।

फिलहाल 24 वे स्थापना दिवस पर लोकसभा चुनाव का निशाना है। केन्द्र और राज्य सरकार की उपलब्धियों को लकर भाजपा मीडिया सम्वाद चला रही है। इसमें वैश्विक निवेशक सम्मेलन से विकास की सम्भावनाएं और अब तक की निवेश उपलब्धियों को गिनाया गया है। घपले-घोटाले भले ही उजागर हो रहे हों लेकिन नेता जी अडिग हैं। उद्यान घोटाले को लेकर मंत्री और विधायक नियमों पर सही होने की बात कर रहे हैं। मंत्री प्रेम चन्द्र अग्रवाल बार-बार विरोध के बावजूद मजबूत होकर आगे बढ़े हैं। दूसरी ओर विपक्षी नेताओं ने बयानबाजी के अलावा ऐसा कुछ नहीं कर पाया है जिसे उल्लेखनीय कहा जाए। इनकी आपसी खटपट इन्हें ले डूबी है। कहने को इस बार फिर से दावा किया जा रहा है कि भाजपा को सत्ता से दूर करेंगे। अल्मोड़ा में कांग्रेस सेवा दल के सम्मेलन में तय किया गया कि प्रशिक्षण शिविर लगाकर अधितम लोगों को सेवादल से जोड़ा जायेगा।

प्रदेश में निर्माण कार्यों की बहार है लेकिन उनकी जाँच भी होनी चाहिये जिनके नाम घपले को लेकर इलाके में चर्चाएं हैं। मसलन कालेजों में रूसा मद पर भारी धनराशि से बिल्डिंग बनने से लेकर सामग्री आने तक का कार्य नेक नीयत से करवाने का संकल्प रहा है। बावजूद कुछ स्थानों पर इस मद का कैसे इस्तेमाल हुआ सन्देह जताया जाता रहा है। इसकी जाँच होनी जरूरी है। निकायों के कार्यों पर भी खूब पलीता लगा है। कौन जाँचेगा? फिलहाल नैनीताल नगर पालिका परिषद में अनियमितताओं पर हाईकोर्ट के निर्देश पर गठित टीम ने जाँच पूरी कर रिपोर्ट शासन को सौंप दी है। कई राज्य आन्दोलनकारी आज तक सम्मान की लड़ाई लड़ रहे हैं। उन आन्दोलनकारियों परिवारों की कौन सुध लेगा जो अब इस दुनिया को छोड़ चुके। उनके परिवारों के हाल को जानते हुए उन्हें भी अवसर दिया जाना चाहिये। राज्य स्थापना दिवस की चमक में इसके सपने सकारा होने चाहिये।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

छात्र संघ के नाम पर अनुशासन से ज्यादा अराजकता का माहौल

प्रदेश में एक समय में एक साथ सभी कालेजों-विश्वविद्यालयों में चुनाव कराने की मंशा एकदम सही थी कि चुनाव सम्बन्धी कार्य बिना घपले के एक साथ निपट जाएं लेकिन छात्र संघ चुनाव के नाम पर जैसा देखने को मिल रहा है वह बहुत ही निराशाजनक है।

सबसे पहली बात तो यह कि बिना तैयारी के विश्वद्यिालय-कालेज कैसे चुनाव करवा सकते हैं। राजाज्ञा हो तो करना होता है। यही सब हुआ। बिना परीक्षाफल आए प्रवेश प्रक्रिया शुरू कर दी गई। इसमें छात्र नेताओं की ओर से बहुत हल्ला मचा। यह भी हुआ कि जब तय तिथि को चुनाव होना ही है तो फटाफट परीक्षाफल की ओर विश्वविद्यालय का ध्यान गया गया एवं सुस्त पड़े महाविद्यालयों में फुर्ती आने लगी। जल्दबाजी में हुई इस कार्यवाही में छात्र संघ चुनावों के लिये बजने वाले ढोल के बीच वह सब होने लगा जिसकी आशंका थी। अपने दबदबे का प्रयोग करते हुए नेताओं ने अथाह हंगामा किया और नामांकन रद्द होने पर छतों पर चढ़ने का फैशन बरकरार रखा। धक्कामुक्की, मार-पीट के मामले होते रहे। बढ़ती जा रही अराजकता को रोकने के लिये पुलिस ही सहारा रह जाती है लेकिन वह भी कितना संभाले? असल गलती कहाँ पर हो रही है यह देखने की बात है।

छात्र संघ की इस जल्दबाजी में कुछ निर्विरोध चुने गये और कई नामांकन में रुक गये। कुछ के बीच धुंआधाज चुनाव टकराव हुआ। इसमें गुरुजनों तक को खूब खरीखोटी सुननी पड़ी। जिस बात पर कालेज प्रशासन का बस ही न हो उस पर भी सुनना पड़ा और जिस बात पर चूक हुई उसके लिये तो अथाह सुननी पड़ी। इस बार के चुनाव के लिये माना जा रहा था कि शिक्षा सत्र को पटरी पर लाने के लिये यह कड़ा कदम है, अब यह भी कहा जा रहा है कि राजनीति का खुला नाच इसमें होने लगा है। राजनीतिक पार्टियों का जैसा दबाव इस बार देखा गया है वह चिन्ता की बात है। स्थानीय नेता, प्रधान, विधायक, ब्लाक प्रमुख, मंत्री तक इन चुनावों के लिये जितने जुड़े रहे इसके पीछे मुख्य कारण वह युवा शक्ति को अपने साथ लपेटे रखना चाहते हैं। आंखिर यह सब हालात हमें किस ओर ले जाएंगे? क्या ऐसे छात्र संघ चुनाव करवाये जाने जरूरी हैं? शिक्षा के मन्दिरों को किसी भी तरह से सिर्फ पठन-पाठन के लिये शुद्ध बनाया जाना चाहिये।

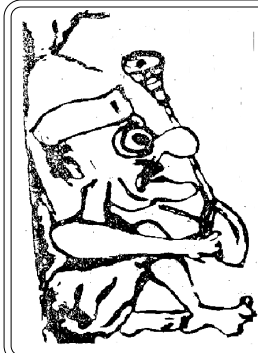

फसक

दाज्यू, चोरी का माल गंध मारने ही वाला ठैरा

बेलगाम गधे में सवार करवाकर दौड़ाने का दर्द ज्यादा होता है बल

दाज्यू, उच्चशिक्षा मंत्री को बधाई। एक दिन में सभी जगह छात्र संघ चुनाव कराने के आदेश के बाद फटाफट परीक्षाफल घोषित हुए और प्रवेश प्रक्रिया चल पड़ी। बेलगाम को लगाम तो लगानी ही हुई। आंखिर कब तक फैल रही दीमक को सहा जाएगा। हालातों को पटरी में लाने में अभी और समय लगेगा.....

बेलगाम से याद आ गया। गढ़वाल में बेलगाम बलुरुवा को डिग्री कालेज में नौकरी का मौका मिल गया परन्तु एक दिन उसे बेलगाम गधे में बैठकर दौड़ा दिया गया। बमुश्किल जान बची। प्रोफेसर सतवन्त बता रहे थे- 'बलुरुवा सीधे अटैक कर दिया करता है। एक बालिका को पकड़ लिया, फिर क्या था पूरा गाँव लट्ठ लेकर पीछे-पीछे दौड़ा। दौड़ते-दौड़ते पट्टी पटवारी तक बात पहुँची। बलुरुवा के कागज-पत्तर लाल कलम से रंगे गये और उसे दूसरी जगह भेज दिया। उसका सपना आज भी कागज रंगने के कारण अधूरा है जिससे वह खूंखार होकर गली-गली दौड़ रहा है।' दाज्यू, सुना है उस गाँव के लोग प्रतिवर्ष बलुरुवा के याद करते हुए बेलगाम गधे पर बलुरुवा का पुतला बनाकर दौड़ाते हैं। लट्ठ लेकर बच्चे बूढ़े सब भी उसे ग्राम की सीमा के पार तक ले जाते हैं। दाज्यू, हमारा भी मन कर रहा था बलुरुवा को देखने का क्योंकि आजकल वह पटरी पार वाले कालेज में है। लेकिन बचदा कह रहे हैं- 'उसके साये से भी दूर रहना। कभी नहीं नहाने वाला बलुरुवा अब बढ़ा हो चुका है। उसने शौचालय के बाहर भी वैज्ञानिक बलुरुवा और बीएड पास लिखवाया है। जो भी मिलने जाता है उसे लपक लेता है।' दाज्यू, आप कहते हो भ्रष्टाचार मुक्त उत्तराखण्ड बनाना है लेकिन बलुरुवा ने तो रूसा के नाम पर खूब उल्टी-दस्त किये बल। कागजों में गोबर-मिट्टी लीप डाली है। आप इनकी जाँच करवा डालो। इनकी गन्द से परेशान साहबों ने अगरबत्ती जलाकर अपना समय काटा। एक साहब ने तो इनकी फाइल बहुत मोटी कर डाली है बल। गन्द के मारे कहीं से भी राहत नहीं मिल रही है। इसलिये आजकल गा रहे हैं- 'चिकियां कलाइयां रे'। दाज्यू, उत्तराखण्ड अपना स्थापना दिवस मना रहा है और बलुरुवा कह रहा है- 'अब मकान बना लिया है, इस इस प्रदेश में इतने छेद करुंगा कि बाढ़ आ जाएगी।' दाज्यू, हमें डर लगने लगा है।

राज्य स्थापना दिवस पर हम मुख्यमंत्री के विधानसभा क्षेत्र में घूमने निकल पड़े तो बिलुरुवा चिल्लाते हुए सड़क पर घूम रहा था- 'मुझे प्रोपर चाहिये। प्रमोशन नहीं हो रहा है। न ही कोई सरकार सुनती है और न ही कोई अधिकारी।' दाज्यू, भल्ला बापू कह रहे थे- 'इनका पूरा इतिहास भूगोल लाल रंग से रंगा है। हरे रंग के प्रदेश में कैसे फिट होगा ये आदमी।' दाज्यू, चोरी का माल गन्ध मारने ही वाला ठैरा। हम तो बस इतना चाहते हैं कि युवा हो चुके उत्तराखण्ड के यौवन को बचाए रखने के लिये बलुरुवा और चुनरुवा जैसों पर लगाम लगे। वरना तो अंकिता हत्याकाण्ड जैसे काण्ड फिर हो सकते हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

पौड़ी लोकसभा सीट

धांकड़ दावेदारों के बीच से तय होगा नाम

पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र रावत, तीरथ रावत, राज्यसभा सांसद अनिल बलूनी, कर्नल कोठियाल, कबीना मंत्री सतपाल महाराज के दांवपेंच समझना है

पौड़ी लोकसभा सीट में धांकड़ दावेदारों के कारण भाजपा को रास्ता बनाना होगा। इस सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत पूरी तरह से जुट चुके हैं। किनारे लगा दिये गये त्रिवेन्द्र ने जो दांव चला है उससे वह अभी तक बढ़त में दिख रहे हैं लेकिन क्या पार्टी पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत को चुप करा लेगी? संगठन में उनकी हमेशा से सक्रिय भागीदारी का इतिहास देखते हुए सरकार के बीच में सीएम की कुर्सी सौंप दी गई थी। उस समय त्रिवेन्द्र और तीरथ के बीच दूरी बढ़ती जा रही थी और बाद में युवा पुष्कर सिंह धामी को सीएम की कुर्सी सौंपकर पार्टी ने अपने मिशन को सफल कर लिया। सरकार और संगठन के तालमेल में पुराने कांग्रेसी और वर्तमान में भाजपा के बड़े नेता सतपाल महाराज की इच्छा दब जाती है। मुख्यमंत्री का सपना संजोए महाराज अपने आप में मजबूत हैं लेकिन पार्टी संगठन की कतार में वह सेंध लगाकर कितना आगे बढ़ सकते हैं बाद की बात है लेकिन चुनाव गणित में कौन कब किस करवट होगा यह जानने वाले महाराज की दावेदारी को मजबूत बता रहे हैं। राज्यसभा सांसद अनिल बलूनी को पार्टी के बड़े नेताओं का करीबी बताते हुए हमेशा से प्रस्तुत किया जाता रहा है और एक समय तो उनके मुख्यमंत्री बनने तक की चर्चा होने लगी थी। ऐसे में बलूनी की दावेदारी को पार्टी स्वीकार ले तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। फौजी पृष्ठभूमि के कर्नल अजय कोठियाल की ओर से भी दावेदारी है। आम आदमी पार्टी में जाकर चुनाव लड़ चुके कोठियाल को पहले भाजपा ने अपनी ओर समेटना चाहा था लेकिन फौजी कोठियाल आप के मुखिया बनकर घूमने लगे थे। अब भाजपाई होकर वह भी इच्छा जाहिर कर चुके हैं।

नैनीताल लोकसभा सीट

दिग्गजों की लाग-लपेट में उलझी है कांग्रेस

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य, किच्छा बिधायक तिलकराज बेहड़, पूर्व सांसद महेन्द्र पाल, प्रवक्ता दीपक बल्युटिया की आरे से दावे किये गये

नैनीताल लोकसभा सीट के लिये भाजपा की ओर से जिस प्रकार दावेदारों की लम्बी सूची दिखाई दे रही है उसी तरह कांग्रेस की ओर से भी बड़े नेताओं ने अपनी इच्छा जाहिर कर दी है। पार्टी हाईकमान के सामने दिग्गजों की लाग लपेट को सुलझाना अभी कठिन दिखाई दे रहा है। टिकट किसको मिलेगा सारे समीकरण धीरे-धीरे बनेंगे। कांग्रेस की ओर से टिकट की इच्छा रखने वालों में नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य सबसे आगे हैं। राजनीति में सर्वाधिक अनुभवी और चतुर यशपाल विधानसभा सीट में बाजपुर सीट पर अपने को बचा पाए थे लेकिन नैनीताल सीट पर उनके सुपुत्र की हार हुई थी। कहने को तो वह कह रहे हैं कि कार्यकर्ताओं की मांग पर चुनाव के लिये वह दावेदारी कर रहे हैं। लेकिन सच में पड़ताल की जाए तो यशपाल को अपनी भविष्य की राजनीति बचाने के लिये रास्ता तलाशना है। यही हाल किच्छा विधायक तिलकराज बेहड़ का है। रुद्रपुर के बाद किच्छा के विधायक बने बेहड़ तराई की राजनीति के अलावा अपने सुपुत्र को आगे करना चाहते हैं। तराई राजनीति का खेल बदलता जा रहा है ऐसे में वह मौका बनाने की चाह में हैं। पूर्व सांसद महेन्द्र पाल अपनी छवि के कारण पहले से ही दावेदारों में गिने जाते रहे हैं। युवाओं की बात करें तो पार्टी के प्रवक्ता और एनडी तिवारी धारा के नेता दीपक बल्युटिया की दावेदारी के बाद कांग्रेस में हलचल है। बड़े नेताओं के झगड़े में पार्टी का निर्णय क्या होगा यह तो समय की बात है लेकिन यह उल्लेखनीय है कि हल्द्वानी विधानसभा सीट पर इन्दिरा हृदयेश के सुपुत्र को टिकट के कारण से दीपक बल्युटिया को मलाल करना पड़ा था। फिलहाल तो पार्टी में आवेदक बढ़ने ही हैं। देखो, विपक्षी एकता का हवाला देकर किस-किस को मना लिया जायेगा? प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा कह रहे हैं कि जीतने वाले को ही टिकट दिया जायेगा। टिकट बंटवारे के लिये प्रदेश और केन्द्र स्तर पर सर्वे चल रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्मृतियां

पूर्व पुलिस महानिदेशक राजेन्द्र प्रसाद जोशी

प्रो. अनिल जोशी

पिछले दिनों उत्तराखण्ड की एक और विभूति हमसे दूर हो गयी।

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व पुलिस महानिदेशक तथा इंटेलिजेंस ब्यूरो के पूर्व प्रमुख श्री राजेन्द्र प्रसाद जोशी का 14 अक्टूबर को नौएडा के एक निजी अस्पताल में स्वर्गवास हो गया। वे लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थे।

मूल रूप से अल्मोड़ा के सेलाखोला से ताल्लुक रखने वाले राजेन्द्र प्रसाद जोशी का जन्म 1933 में मसूरी में हुआ था जहाँ इनके पिता सुरेश चन्द्र जोशी बालोंगंज स्थित मशहूर सेंट जॉर्ज़ेज़ स्कूल में बर्सर थे। स्कूली शिक्षा यहीं से करने के उपरान्त इन्होंने उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की । 1955 में इनका चयन भारतीय पुलिस सेवा में हो गया और उत्तर प्रदेश में ही तैनाती मिली। यहाँ पर यह बताना आवश्यक है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा के इतिहास में 1955 के बैच को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है जिसने देश को टी.एन.सेशन सहित अनेक कुशल प्रशासक दिये ।

सेवा के दौरान श्री जोशी ने उरई, जालौन तथा सीतापुर में विभिन्न पदों पर कार्य किया, लखनऊ में पीए टू आईजी रहे तथा समय समय पर उत्कृष्ट सेवा के लिए सम्मानित होते रहे । 1972 के पश्चात इंटेलिजेंस ब्यूरो की सेवा में पूर्वोत्तर भारत में कई साल तैनात रहे।

अस्सी के दशक में कुछ वर्ष लन्दन स्थित भारतीय उच्चायोग में कार्य किया। वहाँ से लौटने पर उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक नियुक्त हुए। इस पद पर आसीन होने वाले वे उत्तराखण्ड के पहले अधिकारी थे। ये समय बहुत चुनौतीपूर्ण था। मण्डल और राम मन्दिर के मसलों के कारण स्थिति अत्यन्त सम्वेदनशील थी। साम्प्रदायिक सौहार्द्र तथा कानून व्यवस्था को बनाये रखने में भरसक प्रयास किये ।

1989 में विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार द्वारा इंटेलिजेंस ब्यूरो का निदेशक बनाया गया जो कि आन्तरिक सुरक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण पद होता है। इसके पश्चात चेयरमैन ज्वाइंट इंटेलिजेंस कमिटी का पदभार संभाला। मार्च, 1992 में सेवानिवृत्त हो गये। इनकी छवि एक ईमानदार एवं कर्तव्यनिष्ठ नौकरशाह की रही। स्व. राजेन्द्र प्रसाद जोशी की पारिवारिक पृष्ठभूमि शिक्षकों तथा प्रशासकों की रही। जाने माने समाजशास्त्री तथा कुमाऊँ विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रोफेसर भूपेन्द्र कुमार जोशी, जो वर्तमान में दून लाइब्रेरी के अध्यक्ष हैं, इनके अनुज हैं। पूर्व कैबिनेट सचिव तथा राज्यपाल पद्म विभूषण स्वर्गीय भैरव दत्त पाण्डे, पर्व कैबिनेट सचिव कमल पाण्डे तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी. एफ.) के पूर्व महानिदेशक सतीश दत्त पाण्डेय, तीनों इनके साढ़ू भाई हैं। इनकी पत्नी डॉक्टर तारा जोशी (जिनका निधन अप्रैल, 2021 में हो गया था) के सबसे बड़े भाई प्राफेसर गोविन्द चन्द्र पाण्डे विख्यात इतिहासकार थे तथा जयपुर और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। दूसरे भाई विनोद पाण्डे भी भारत के कैबिनेट सचिव रहे और बाद में बिहार एवं अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल। स्व. जोशी अपने पीछे पुत्री रचना तथा पुत्र समीर को छोड़ गये हैं ।

खेल महाकुम्भ में उत्तराखण्ड के मुर्गा झपट और पारम्परिक खेल शामिल होने की खुशी

देहरादून। राज्य स्तर पर होने वाले खेल महाकुम्भ में इस बार पहाड़ के पारम्परिक खेल मुर्गा झपट, भारत के पारम्परिक खेल मलखम्भ और अमेरिका के राष्ट्रीय खेल बेसबॉल के शामिल होने की खुशी है। खेल महाकुम्भ की प्रतियोगिता से सही खिलाड़ियों को आगामी 38वें राष्ट्रीय खेलों के लिये तराशा जाएगा। इन्हीं कारणों से खेल महाकुम्भ में इस बार राज्य स्तर पर ओपन आयु वर्ग की प्रतियोगिताएं हो रही हैं। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन राष्ट्रीय खेलों के पूर्वाभ्यास के रूप में है। इसमें एथलेटिक्स, बाक्सिंग, जूडो, कराटे, फुटबाल, ताइक्वांडो, बास्केटबाल, बालीबाल, तीरंताज, भारतोलन और बेसबॉल खेल को शामिल किया गया है। अण्डर 17 बालक-बालिका की राज्य स्तर की स्पर्धा में पहाड़ का पारम्परिक खेल मुर्गा झपट और अण्डर 19 आयु वर्ग में मलखम्भ को शामिल किया गया है। स्थानीय खेलों को प्रोत्साहन करने पर ललित सिंह मर्तोलिया बताते हैं कि मुर्गा झपट जैसे खेल बहुत लोकप्रिय हैं। झुन्नीमार प्रतियोगिता का आयोजन तमाम जगह किया जाता है। बचपन में इस प्रकार के खेलों में रहे लोग जानते हैं कि यह कितने ज्यादा प्रचारित थे और स्थानीय मेलों व उत्सवों में इस प्रकार के खेल बच्चे और बड़े भी खेलते थे। इन्हें प्रोत्साहित करने के लिये देहरादून में भी खेला जाता है। नई पीढ़ी के बच्चों को उन पुराने खेलों के बारे में बताने के लिये इन्हें आयोजित किया जाता है। अब जबकि खेल महाकुम्भ में इस प्रकार के खेलों को शामिल किया जा रहा हो तो खुशी होती है। मोबाइल में उलझी पीढ़ी को अपने परम्परागत खेलों में रुचि लेनी चाहिये इससे वह सामाजिक स्तर पर आगे बढ़ेंगे।

ज्योतिष की बातें - 152

13 नवम्बर 2023 को बुध वृश्चिक राशि में पश्चिम दिशा में उदय हो जाएगा। बुध के उदय अस्त होने का राशिफल पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। 16 नवम्बर 2023 को मंगल स्वराशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा लेकिन उस पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। फलदीपिका के अनुसार मंगल तीसरे, छठवें व ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है तथा कर्क और सिंह राशियों के लिए योगकारक भी होता है। अतः अगले 42 दिन मंगल अपने कारक विषयों स्वास्थ्य, पराक्रम, युद्ध, खेलकूद आदि में मकर, कन्या, सिंह, कर्क व मिथुन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। शेष राशियों को भी मंगल सामान्य फल प्रदान करता रहेगा।

17 नवम्बर 2023 को सूर्य मित्रराशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा। वहाँ पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। अगले एक माह तक सूर्य स्वास्थ्य, सफलता, यश आदि अपने कारक विषयों में कन्या, मिथुन, कुम्भ व मकर राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। शेष राशियों के लिए सामान्य रहेगा।

गोवर्धन पूजा- कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा (न्यूनतम नौ मुहूर्ता) को गोवर्धन पूजा का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार 14 नवम्बर 2023 को गोवर्धन पूजा और उससे सम्बन्धित अन्नकूट आदि पर्व मनाए जाएंगे।

यम द्वितीया, भैया दूज- कार्तिक शुक्लपक्ष द्वितीया अपराह्न व्यापिनी तिथि तदनुसार बुधवार 15 नवम्बर 2023 को भाई बहन का यह पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक् विचार- 43

नाम रखना और नाम बदलना

प्राचीन इतिहास में नाम रखने का वर्णन आता है, बदलने का नहीं। भगवान राम, लक्ष्मण आदि के आठों पुत्रें ने श्रावस्ती आदि आठ नए नगर बसाये थे। राजा जयसिंह ने जयपुर नाम का नगर बसाया। गढ़वाल के राजा ने अपने तीन बेटों के नाम से तीन नगर नरेन्द्रनगर, कीर्तिनगर व प्रताप नगर बसाए थे। औपचारिक नामकरण न होने पर भी स्वाभाविक नाम भी पड़ जाते हैं जैसे उपाध्याय जी ने सबसे पहले अपना मकान बनवाया तो उसे मोहल्ले का नाम पड़ गया उपाध्याय नगर। किसी भी नगर के नाम में उसका इतिहास छिपा होता है। इटावा नगर में पहले ईंट के भटे हुआ करते थे इसलिए उसका नाम इटावा पड़ गया। आदि आदि। कुछ नाम अपभ्रंश होकर बदल जाते हैं। जैसे गुरुग्राम का अपभ्रंश होकर गुड़गाँव हो गया था। किसी ने गुड़गाँव नामकरण उस शहर का नहीं किया था। उच्चारण में सुविधा के आधार पर तत्सम शब्द तद्भव रूप धारण कर लेता है। अब गुड़गाँव का नाम बदलकर गुरुग्राम रखने की राजाज्ञा जारी हुई है उसका कोई औचित्य नहीं रहता। बहुत से नगरों आदि के नाम महापुरुषों के नाम पर रखे जाने की नई रिवाज पैदा हुई है जैसे- वीरांगना लक्ष्मीबाई रेलवे स्टेशन, छत्रपति शिवाजी टर्मिनल, स्वर्गीय भुवन चन्द्र जोशी राजकीय पॉलिटेक्निक। महापुरुषों के नाम पर नगरों के नाम, पार्कों के नाम, बांधों के नाम रखे जाने लगे हैं। रुद्रपुर का नाम बदल कर ऊधम सिंह नगर नाम रखा गया जबकि उस रुद्रपुर का क्रांतिकारी ऊधम सिंह के जीवन से कोई लेना-देना नहीं।

नाम बदलने से उस स्थान विशेष का इतिहास बदलना ही कहा जाएगा। हम यह भी भूल जाएंगे कि यहाँ पर अंग्रेज राज्य करते थे और हमने उनको यहाँ से मार भगाया। अपना पराक्रम भी भूल जाएंगे। नाम बदलना देश के प्राचीन गौरवशाली इतिहास नष्ट करने जैसा है। इससे आम जनता को बहुत परेशानी भी होती है। इस पर रोक लगाई जानी चाहिए। सर्वोत्तम उपाय यही है कि नाम बदलने के लिए तीन चौथाई बहुमत आवश्यक कर दिया जाए।

-सरल

दुर्घटना में बाल-बाल बचे पिघलता हिमालय के सदस्य

बेरीनाग। हरि प्रदर्शनी मल्ला दुम्मर के लिये अपनी निजी कार से जा रहे पिघलता हिमालय के तीन सदस्य भीषण दुर्घटना में घायल हो गये। 2 नवम्बर को हल्द्वानी से प्रातः रवाना हुए डॉ. पंकज उप्रेती, गणेश सिंह ल्वांल, धीरज उप्रेती कार खाई में गिरने से घायल हो गये। उन्हें हल्द्वानी फिर दिल्ली रैफर कर दिया गया। बताया जा रहा रहा है। हरि प्रदर्शनी समारोह के लिये यह तीनों निकले थे और तय था कि इस बार स्व.नेत्र सिंह ल्वाल की स्मृति में भी कोई कार्यक्रम होगा। दिन में 12.30 बजे सेराघाट क्षेत्र के रामपुर में फोर्ट कार अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई। कार को देख नहीं लगता था कोई बच पायेगा। ग्रामीणों मौके पर पहुंचकर निकाला जिसमें सभी घायलों को मेडिकल कालेज अल्मोड़ा पहुँचाया गया। वहाँ पर उपचार के बाद सुशीला तिवारी हल्द्वानी ले जाया गया। गणेश ल्वांल की हालत ज्यादा खराब होने से दिल्ली ले जाया गया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मुख्य मार्गों पर ईवी चार्जिंग स्टेशन होंगे

देहरादून। प्रदेश के प्रमुख मार्गों पर हर सौ किमी पर एक इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) चार्जिंग स्टेशन होगा। इसके लिये तैयारी होने लगी है। परिवहन मुख्यालय ने सभी जिलों के डीएम से सौ वर्ग मीटर जमीन, बिजली कनेक्शन और इंटरनेट की उपलब्धता का ब्यौरा मांगा है।

चित्रशिला घाट पर विद्युत शवदाहगृह

हल्द्वानी। रानीबाग चित्रशिला घाट में अब विद्युत शवदाहगृह शुरु होने जा रहा है। इसके लिये इलेक्ट्रिानिक भट्टी मंगवाकर फिटिंग हो चुकी है। इसके अलावा लकड़ी से शव जलाने के लिये यहाँ पर चार स्थान बनाए गए हैं। भविष्य में नदी स्वच्छता को देखते हुए नवीन व्यवस्था की जा रही है।

शिक्षकों की नियुक्ति को प्रदर्शन

बेरीनाग। राजकीय प्राथमिक विद्यालय बर्षायत में शिक्षकों की नियुक्ति की मांग को लेकर ग्रामीणों ने क्षेत्र पंचायत सदस्य चारू पन्त के नेतृत्व में तहसील कार्यालय में प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। तहसील दिवस पर भी मांग की गई थी लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई।

तेजी से पिघल रहे ग्लेशियरों से चिन्ता

देहरादून। उत्तराखण्ड में जलवायु परिवर्तन ने वैज्ञानिकों की चिन्ता बढ़ा दी है। इस वर्ष मौसम का बदलाव और तापमान में बढ़ोत्तरी के कारण ग्लेशियर तेजी से पिघलने की बात कही जा रही है। ऐसे में भिलंगाना झील का आकार बढ़ने लगा है। ऐसे में भविष्य में झील में किसी भी प्रकार की परेशानी न हो इसके लिये बाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालय जियोलॉजी के वैज्ञानिक सैटेलाइट से झील पर नज़र बनाए हुए हैं। इंस्टीट्यूट की ओर से बीते कुछ समय से भिलंगना झील पर अध्ययन किया जा रहा है परन्तु इस बार जलवायु परिवर्तन में बदलाव पर वैज्ञानिकों की चिन्ता बढ़ गई है। वैज्ञानिकों के अनुसार आने वाले दस साल में तापमान में 0.5 डिग्री तक की बढ़ोत्तरी देखने को मिल सकती है।

वैज्ञानिक अध्ययन के इतर भी बात करें तो साफ दिखाई दे रहा है कि मौसम में बदलावा और ताप में वृद्धि हुई है। इसका सीधा असर वनस्पतियों पर भी हो रहा है। पर्यावरणविद् भी अपने तरीके से बार-बार चिन्ता जताते रहे हैं।

देवीधुरा में जबर्दस्त छात्र आन्दोलन

लोहाघाट। राजकीय आदर्श महाविद्यालय देवीधुरा की 5 सूत्रीय मांग को लेकर छात्रों का जबर्दस्त आन्दोलन हुआ है। ब्लाक प्रमुख सहित स्थानीय नेता छात्रों के साथ हैं। विद्यार्थी परिषद के आह्वान पर छात्र संघ अध्यक्ष देवेन्द्र भट्ट के नेतृत्त में स्नातकोत्तर कक्षाओं के संचालन सहित अन्य मांगों को लेकर यह बड़ा आन्दोलन है।

अस्कोट : अब हैदराबाद की कम्पनी

अस्कोट। क्षेत्र में फिर से सोना तलाशने की चर्चा हो रही है। माना जा रहा है कि यहाँ धातु है और इसके लिये हैदराबाद की कम्पनी कार्य करेगी। बताते चलें कि पहले भी गोल्ड माइन कम्पनी ने अस्कोट में सोने की खोज में शुरुआत की थी और कुछ समय बाद सब सिमट गये। अब डीडीहाट के विधायक ने बताया है कि पूर्व में कराए गए भूगर्भीय सर्वेक्षण में अस्कोट से जौलजीवी और ओगला से भागीचौरा तक करीब 15 किमी क्षेत्र में भूगर्भ में सोना, तांबा, जस्ता और शीशा होने की पुष्टि हो चुकी है। इसके लिये कनाडा की कम्पनी गोल्ड माइन ने कई सुरंग तैयार कर सर्वे किया, इस बीच अस्कोट अभ्यरण का पेंच फंसने से काम समेटना पड़ा। अब अस्कोट अभ्यरण का पेंच हटने के बाद हैदराबाद की एक कम्पनी से करार हो चुका है। उल्लेखनीय है कि गोल्ड माइन कम्पनी के कार्य के दौरान खूब प्रचार हुआ था कि अस्कोट में सोने की खोज हो रही है और धातुओं के भण्डार निकलेंगे। वही प्रचार अब फिर से शुरु हो चुका है। सर्वेक्षण में कितना पता चला है और क्या होने वाला है वह आने वाले दिनों में स्पष्ट हो पाएगा।

परिक्रमा

गंगोलीहाट के प्रसिद्ध बौराणी मेले की तैयारी शुरु

गंगोलीहाट। क्षेत्र के प्रसिद्ध बौराणी मेले की तैयारी शुरु हो चुकी है। बौराण के सैम मन्दिर में मेले के आयोजन हेतु ग्राम प्रधान चाक मनोज आर्या की अध्यक्षता में बैठक हुई। मेला समिति के सचिव प्रकाश सिंह बोरा ने मन्दिर पुनर्निर्माण में आय-व्यय का लेखाजोखा प्रस्तुत किया। गोकुल सिंह बोरा ने किये गये कार्यों की जानाकरी दी। इसके बाद मेले के लिये कमेटियों का गठन किया गया। 26-27 नवम्बर को होने वाले मेले के लिये सर्वसम्मति से दीवान सिंह बोरा को अध्यक्ष, आन सिंह बोरा, उप प्रधान चाक, अनिल कुमार को उपाध्यक्ष, ग्राम प्रधान झलतोला ममता बोरा को व्यवस्थापक नियुक्त किया गया। इसके आठों ग्राम पंचायतों के प्रधान एवं चाक क्षेत्र पंचायत सदस्यों को संरक्षक के रूप में शामिल किया गया। महेश राम सांस्कृतिक संयोजक हैं। जिला पंचायत सदस्य राजेन्द्र सिंह बोरा ने बताया है कि मेले को भव्य बनाने के लिये युवाओं की टीम सम्पर्क कर रही है और इसमें स्थानीय लोकरंग दिखाई देंगे।

स्मरण

हरि प्रदर्शनी और कलाकार नेत्र सिंह ल्वांल

हुनकारा, रौतौंग, चित्कू हरेक आँगन में दिखते थे

स्व. नेत्र सिंह ल्वांल जी को सत् सत् नमन। मैंने वर्ष 1961 में पहली बार श्री हरि प्रदर्शनी देखा। मल्ला दुम्मर निवासी जोहार से थोड़े दिन पहले पहुँचे थे। गाँव में खूब चहल-पहल थी माइग्रेशन प्राइमरी स्कूल भी पहुँच चुका था। सभी अपने अपने काम में व्यस्त थे। घोड़े खच्चरों के खांखर, घंटे घौन व भेड़ बकरियों के छोटे घंटियों की आवाज तथा बड़े बड़े खूंखार हुनि कुकूर व अप्सो की भौंकने की भयानक आवाज से वातावरण संगीतमय प्रतीत होता था। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। स्टेज तिरपाल से बनाया गया था। कार्यक्रम का संचालन बड़े भ्राता स्व. पुष्कर सिंह जंगपांगी जी (डिप्टी कमिश्नर सेल टैक्स) ने सुचारू रूप से सम्पन्न किया। बच्चों ने नाटक में भाग लिया। श्री नेत्र सिंह ल्वांल जी ने फिल्मी गानों से सबका मन मोह लिया ऐसा लगता था जैसे मोहम्मद रफी गा रहे हों गजब की आवाज थी, उन्होंने अपने स्वयं के रचित गाने बरसी को बार मैंने नरणि छै रितू छै मैंना, रंग रंगीलो.....भी गाया था। स्व. बेनी सिंह जंगपांगी (राय साहब परिवार) ने हारमोनियम के साथ फिल्मी गाना- आधा है चन्द्रमा आधी रात है.....गाया था, अच्छी आवाज थी। श्री हरि प्रदर्शनी के संस्थापक स्व. नर सिंह जंगपांगी जी का निधन उसी वर्ष प्रदर्शनी से लगभग दो महीने पहले हुआ था। तिब्बत व्यापार का भी अन्तिम वर्ष था, किसी को भी नहीं पता था अगले वर्ष हुनदेश तिब्बत व्यापार के लिए नहीं जा पायेंगे। पूरे गाँव में उन दिनों उत्सव का माहौल था। हुनकारा, रौतौंग, चित्कू हरेक आँगन में दिखते थे। शिकार बात गीमा अर्जी छक के खाने को मिलता था।

-डॉ.गोविन्द सिंह जंगपांगी (देहरादून)

गणेश प्रताप सिंह ल्वांल

श्री नेत्र सिंह ल्वांल पुत्र श्री चन्द्र सिंह जी का जन्म 1925 में मल्ला दुम्मर में हुआ, उनको घर गाँव में उमेद सिंह के नाम से जानते थे, उनका पिताजी का नाम श्री चन्द्र सिंह और माता जी का नाम श्रीमती आमरा देवी, उनका प्रारम्भिक शिक्षा कक्षा 5 तक मुनस्यारी में हुआ। ततपश्चात 6 कक्षा के बाद पढ़ाई हेतु अल्मोड़ा गए परन्तु पढ़ाई में उनका मन नहीं लगा और वाफिस घर आ गए। घर में उनका काम में मन नहीं लगता था, उस समय जीवन यापन बहुत कठिन था मुनसियार से जोहार और जोहार से हुदेश भेड़ बकड़ी, घोड़ों के साथ और वापिसी मुनस्यार फिर नगड़ झलौरी जाते थे, एक बार उनका अपने पिताजी के साथ कुछ बात को लेकर बहस हुआ फिर घर से भागकर अल्मोड़ा चले गए थे वहा 1944 में 1 कुमाऊं रेजिमेंट में भर्ती होकर रानीखेत गए। उनका लगाव बचपन से ही संगीत से था खुद गीत की रचना कर उसे संगीत में पिरोते थे, उन्होंने 1950 को फौज की नौकरी छोड़ मुम्बई की ओर चल दिए, मुम्बई नगरी में काफी संघर्ष के पश्चात भी उन्हें कोई काम संगीत या गायकी में हासिल नहीं हुआ क्योंकि उनकी कोई संगीत पृष्ठभूमि के नही थी फिर उन्होंने 1957-1958 में गन्धर्व महाविद्यालय पुणे से तबला वादन में डिप्लोमा किया और संगीतकार श्रीमती उषा खन्ना के साथ तबला वादन प्रारम्भ किया। उनके साथ में मुनस्यारी क्षेत्र के श्री जवाहर राम जी थे जिसे उन्होंने उषा खन्ना के साथ बासुरी वादन के लिए रखा था, बाद में जवाहर राम जी को चन्द्र प्रकाश के नाम से जाने जाते थे। जवाहर राम जी के दो बिटिया है जो कि सम्पन्न परिवार में ब्याही है, जवाहर राम जी का मृत्यु हो चुका है। कुछ वर्ष के बाद श्री नेत्र सिंह जी ने उषा खन्ना जी संगीत टीम को भी अलविदा कर दिया था क्योंकि वे एक स्वतंत्र विचार के इन्सान थे किसी भी गलत बात पर समझोता नही करते थे, संगीत उनके रग रग में बसा था और संगीत को जीते थे, उन्होंने अपनी रचनाएं गीत कुमाउंनी बोली में शुरु किया और पहली बार 1960 के दौरान घाटकोपर में कुमाउंनी रामलीला की शुरुवात किया और उसमे संगीत दिया, वहा उनको नेत्र सिंह कुमाऊनी के नाम से जाना जाता था उनके साथ सहायक के तौर पर चन्द्र प्रकाश जी भी थे। संगीत का शौक तो था परन्तु संगीत का शौक भूखे पेट तो नही भर सकता अत: उन्होंने मुम्बई में लाइट हाउस लाइट शिप में बतौर सिक्योरिटी में नौकरी करना शुरू किया जिससे आजीविका और शौक दोनो पूरा हुआ, अपनी रचना कुमाउंनी बोली में लिखना शुरू किया। मल्ला दुम्मर में हरी प्रदर्शनी में 1960 में पहली बार संगीत कार्यक्रम की शुरूवात किया गया जिसमें उनका प्रसिद्ध गीत 'हरी सिंह ज्यु की यादगार' है, उन्होंने अनेकों गीतों की रचना किया और जब सन 1961 मदकोट की किसान मेला में अपने गीतों को मेला में गाया 'ठण्डो ठण्डो पानी, हैमी छू कुमय्या हमारो कुमाऊं, आज क दिन छु मैं घर माज और एक गीत जो कि बहुत ही प्रसिद्ध है- बरस को बार मैना इसके अलावा कई गीत ऐसे है जो उन्होंने लिखे। उनका संगीत और गीत से प्रभावित होकर तब उस समय का जिला अधिकारी श्री जीवन चन्द पाण्डेय जी ने उनको पुरुस्कार से नवाजा, तब से पूरे मुनस्यारी में उन्हे लोग नेत्र सिंह कलाकार के नाम से जानते थे। उन्होंने शादी नहीं किया पूरा जीवन संगीत को जिया, उनके छोटा भाई स्वर्गीय प्रताप सिंह जो कि दुम्मर गाँव मैं निवास करते थे उनके अभी दो पुत्र हैं बड़े का नाम गणेश और अनुज का नाम देवेन्द्र दोनो फिलहाल हल्द्वानी मै निवास करते है। श्री नेत्र

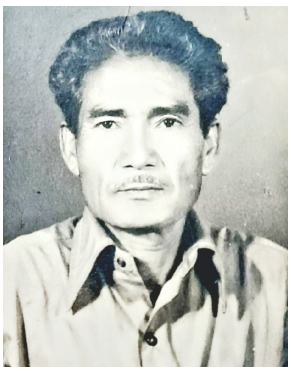

सिंह जी 1984 मैं मुम्बई से सेवानिवृत हुये और दुम्मर गाँव मैं रहने लगे परन्तु उनका स्वास्थ्य खराब होने के कारण 14 नवम्बर 1986 को हमेशा के लिए परमधाम को सिधार गए। मैं बचपन में 4 वर्ष तक उनके साथ मुम्बई मैं रहा, उनका संगीत से लगाव मुझे अभी याद आता है। वे अधिकतर समय अपने संगीत में इतना तल्लीन रहते थे कि उन्हें पता नही चलता कौन आ रहा, जब ध्यान हट जाता तब पूछते थे- कब आये, परन्तु वे नही चाहते कि मेरा लगाव संगीत से हो। कहते थे पढ़ाई करो और कुछ नही करना है क्योंकि उन्हें वह मुकाम हासिल नहीं हुआ जिसमें वो काबिल थे इसलिए वे कहते थे कि संगीत मैं कुछ नहीं है। यदि आज की तरह सोशल मीडिया और अन्य होता तो सायद प्रसिद्धि मिलता।

(लेखक स्व.नेत्र सिंह जी के भतीते हैं।)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

विगत 10 वर्षों से प्रोफेशनल कोर्सेज में कुमाऊं की सबसे अग्रणी संस्था, जिसके द्वारा निम्न कोर्सेज सफलता पूर्वक चलाएं जा रहे हैं

- B.Sc IN INFORMATION TECHNOLOGY
- BCA
- CATERING TECHNOLOGY & HOTEL MANAGMENT
- MASS COMMUNICATION & JOURNALISM
- BANKING AND FINANCE MANAGEMENT
- DIPLOMA IN HOTEL MANAGEMENT

100% PLACEMENT IN ALL COURSES

SEPARATE BOY & GIRLS HOSTEL FACILITIES

Microsoft TCS TATA CONSULTANCY SERVICES ITC TAJ wipro

WORLDWIDE BOOK OF RECORDS

कालेज ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड केटरिंग टेक्नोलॉजी द्वारा विश्व का सबसे बड़ा सेल बनाने का कीर्तिमान बनाया गया

NO. 1 COLLEGE FOR PLACEMENT IN KUMAUN UTTARAKHAND

आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में अपनी नौकरी और विकास को सुनिश्चित करने के लिए साधारण बीए, बीएससी, बीकॉम की तुलना में प्रोफेशनल कोर्सेज का चुनाव कर अपने भविष्य को दीजिये नए आयाम।

कॉलेज बस की सुविधा उपलब्ध

KITM COLLEGE

KITM DEGREE COLLEGE

1 नवंबर 2023 से डिप्लोमा इन होटल मैनेजमेंट में प्रवेश प्रक्रिया आरंभ हो जाएगी, जिसको करने के बाद कॉलेज द्वारा दुबई में प्लेसमेंट की सुविधा प्रदान की जाएगी। आज ही अपना प्रवेश सुनिश्चित कराएं और अपने भविष्य को बेहतर बनाएं।

Our Regulators/Course Partner with Soban Singh Jeena University Almora.

Bypass Road, Bigrabag, Block-Khatima (Uttarakhand)

FOR MORE DETAIL

9568110012

Website : www.kitmcollege.com

उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस एवं अंधेरे से उजियारा करने वाले दीपों का पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हरि प्रदर्शनी में झूमा दुम्मर

लघु एवं कुटीर उद्योग प्रदर्शनी में भागीदार पुरस्कृत

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

मुनस्यारी। हरि स्मारक समिति द्वारा प्रतिवर्ष मनाई जाने वाली हरि प्रदर्शनी इस बार भी तीन दिनों तक यादगार तरीके से रही। स्वच्छता अभियान के साथ शुरु हुए आयोजन में इस बार एनडीए परीक्षा के टॉपर रहे शिवराज सिंह पछाई का स्वागत सम्मान किया गया। प्रभातफेरी के साथ बच्चों की प्रतियोगिताओं का आकर्षण इस बार था। सबसे शानदार रहा इमला, दरांती, जैंती, दरकोट से आई महिला मंगल दलों का प्रदर्शन।

प्रदर्शनी का उद्घाटन विधायक हरीश धामी ने करते हुए इसकी सराहना की। भूपेश सिंह जंगपांगी, गंगा सिंह जंगपांगी, करन सिंह जंगपांगी, किशन सिंह जंगपांगी, धाम सिंह बरफाल, प्रधान पंकज वृजवाल, मनोज जंगपांगी मौजूद थे।

इस अवसर पर मल्ला जोहार विकास समिति का वार्षिक अधिवेशन भी हुआ। पुलिस महानिदेश रहे कुन्दन सिंह मुख्य अतिथि व गंगा सिंह पांगती विशिष्ट अतिथि के रूप में थे। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने जोहार उपेक्षा के लिये शासन-प्रशायन को कोसा। जिसमें स्वास्थ्य विभाग के भवान वर्मा, लोक बहादुर जंगपांगी, ललित जंगपांगी, गोकर्ण सिंह मर्तोलिया, लक्ष्मण सिंह पांगती, तारा पांगती, मंगल सिंह जंगपांगी, प्रहलाद सिंह बरफाल सहित तमाम लोग थे।

जोहार सांस्कृतिक संगठन पिथौरागढ़ का वार्षिकोत्सव

संस्थापक अध्यक्ष बृजमोहन टोलिया की याद में बड़ी संख्या में जुटे लोग

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

पिथौरागढ़। जोहार सांस्कृतिक संगठन का वार्षिकोत्सव भव्य तरीके से मनाया गया। संरक्षक मण्डल सदस्य डॉ. देवराज पांगती, लक्ष्मण सिंह मपवाल, कुन्दन सिंह टोलिया, गजेन्द्र सिंह मपवाल, गणेश सिंह मर्तोलिया, कैलाश सिंह टोलिया, राम सिंह टोलिया, त्रिलोक सिंह टोलिया, के साथ ही पूरी टीम द्वारा जिस प्रकार से आयोजन को अंजाम दिया गया वह सफल रहा। संगठन के अध्यक्ष भूपाल सिंह बरफाल ने सभी से संगठन की एकता पर बल देते हुए कहा कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिये जरूरी है। मुख्य अतिथि समाजसेवी श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने संगठन द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए युवाओं से अपनी जड़ों के साथ बने रहने का आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि लाल सिंह बोनाल, रंजीत सिंह धर्मशक्तू, हयात सिंह टोलिया, केदार सिंह लस्पाल समारोह में थे।

बताते चलें कि जोहार सांस्कृति संगठन द्वारा 2015 से यह आयोजन किया जा रहा है। सामाजिक जनों के जोर से यह कार्य फलाफूला। इसके तहत खिचड़ी, वृक्षारोपण, मैसर कुण्ड संरक्षण सहित कई कार्यक्रम किये जाते रहे हैं। इस बार का आयोजन को संस्थापक अध्यक्ष डा. बृजमोहन सिंह टोलिया को समर्पित था। समारोह में उन्हें याद करते हुए अपनी संस्कृति के लिये हमेशा एकजुट रहने का आह्वान किया। बताया कि किस प्रकार जिला मुख्यालय सोर घाटी में जोहारियों ने अपनी मजबूती बनाई और सामाजिक कार्यों में भागीदारी की। सांस्कृतिक समारोह में स्थानीय कलाकारों की शानदार प्रस्तुति के साथ ही मुनस्यारी से आये लक्ष्मण सिंह पांगती लछबू व कलाकारों ने यादगार क्षण बना दिये। आयोजन में सोर घाटी के अलावा अन्य जगह से आये मेहमानों ने भागदारी की।

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

MARTOLIA
FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

DESTINATION UTTARAKHAND
GLOBAL INVESTORS SUMMIT 2023
Peace To Prosperity

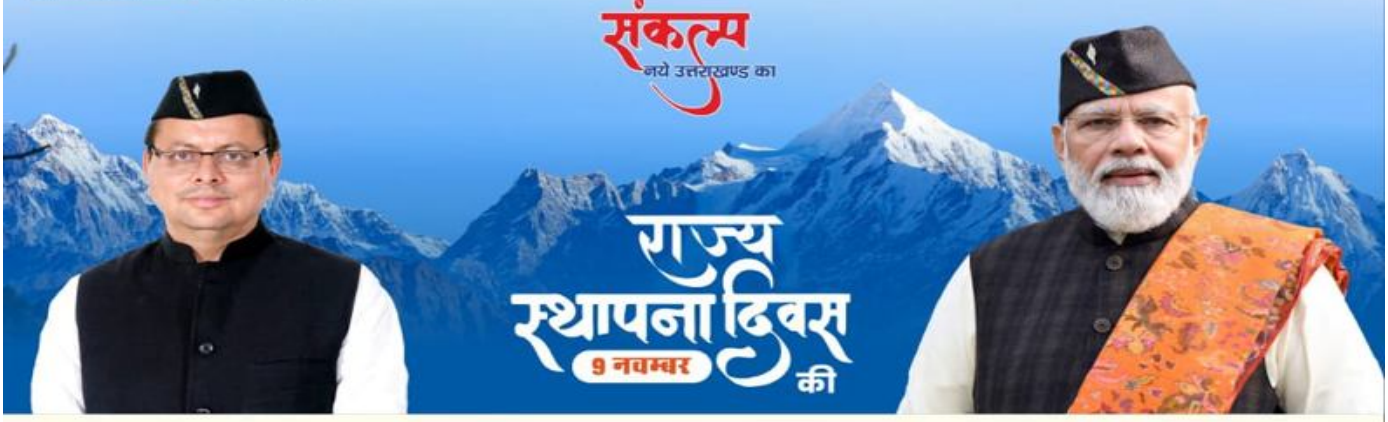

माननीय प्रधानमंत्री जी ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक कहा है। हम प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप राज्य को हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिये विकल्प रहित संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।

पुष्कर सिंह धामी मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

हार्दिक शुभकामनाएं

21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को लगातार मजबूत कर रहा है। ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा

नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री

केदारनाथ बदरीनाथ धाम में 1300 करोड़ रुपये के पुनर्निर्माण/पुनर्विकास कार्य, चारधाम यात्रा के दौरान रिकॉर्ड 55 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किये दर्शन।

मानस खण्ड मंदिर माला मिशन।

4000 से अधिक होम-स्टे विकसित, 16 ईको टूरिज्म डेस्टिनेशन का विकास।

मुख्यमंत्री सशक्त वहना उत्सव योजना के तहत महिला समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों को प्रोत्साहन।

पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा उत्तराखण्ड को बेस्ट एडवेंचर टूरिज्म डेस्टिनेशन का अवार्ड।

रेल कनेक्टिविटी : ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना, वन्दे भारत एक्सप्रेस ट्रेन, टनकपुर बागेश्वर रेल लाईन।

रोड कनेक्टिविटी : चारधाम ऑल वेदर रोड, दिल्ली-देहरादून एलिवेटेड रोड व अन्य राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास।

रोप-वे कनेक्टिविटी : पर्वतमाला परियोजना, गौरीकुण्ड-केदारनाथ रोप-वे कनेक्टिविटी, गोविन्द घाट - हेमकुण्ड, सुरकण्डा देवी रोप-वे।

जमरानी बांध परियोजना को केन्द्रीय कैबिनेट की आर्थिक मामलों की कमेटी ने दी मंजूरी।

ग्लोबल इन्वेस्टर समिट 2023 के लिये अब तक 1.24 लाख करोड़ रुपये से अधिक के एमओयू।

एस.जी.एस.टी. संग्रह में 33 प्रतिशत वृद्धि, राज्य की प्रति व्यक्ति आय में 12 प्रतिशत से अधिक वृद्धि।

राजकीय विद्यालयों के साथ राजकीय सहायता प्राप्त (अशासकीय) विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक के छात्र-छात्राओं को निशुल्क पाठ्य पुस्तकें।

- देश का सबसे कठोर नकल विरोधी कानून।
- लखपति दीदी योजना के तहत 1.25 लाख महिलाओं को लखपति बनाने का लक्ष्य।
- पलायन रोकने तथा रिवर्स पलायन को बढ़ावा देने हेतु "मुख्यमंत्री सीमान्त क्षेत्र विकास योजना"।
- मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना व मुख्यमंत्री आंचल अमृत योजना।
- मिशन दालचीनी, मिशन तिमरु, एरोमा पार्क व एरोमा वैली।
- राज्य में शहीद सैनिकों के परिवारों के एक सदस्य को रोजगार तथा विशिष्ट सेवा मेडल अवार्ड राशि में बढ़ोत्तरी।
- राज्य की महिलाओं को सरकारी नौकरी में 30 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण।
- दीनदयाल उपाध्याय सहकारिता किसान कल्याण योजना के अन्तर्गत किसानों को 3 लाख और स्वयं सहायता समूहों को ₹ 5 लाख तक की धनराशि का ब्याज रहित ऋण।
- स्टेट मिलेट मिशन में स्थानीय कृषकों से झंगोरा, मंडुवा, लोयाबीन एवं चौलाई का उचित मूल्य पर क्रय।
- हॉर्टिकल्चर को बढ़ावा देने के लिए 50 हजार पॉलीहाउस का बजट प्रावधान।
- राज्य के युवाओं के लिए "विदेश रोजगार प्रकोष्ठ का गठन"।
- समान नागरिक संहिता के लिये प्रभावी पहल।
- अटल आयुष्मान योजना में 5 लाख रुपये तक का निशुल्क इलाज।
- राज्य में निर्धन परिवारों को वर्ष में 3 सिलेन्डर निःशुल्क रीफिल की सुविधा।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)